A H3N2

चर्चा में क्यों ?

- ICMR ने हाल ही में इन्फ्लुएंजा उपप्रकार A-H3N2 से जुड़े खांसी और बुखार के बढ़ते मामलों के प्रति एलर्ट जारी किया है।

ICMR (भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद) के बारे में

- इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है।
- यह जैव चिकित्सा अनुसंधान के निर्माण, समन्वय और प्रचार के लिए भारत में शीर्ष निकाय है, जो दुनिया के सबसे पुराने चिकित्सा अनुसंधान निकायों में से एक है।
- ICMR ने हमेशा एक ओर जैव चिकित्सा अनुसंधान में वैज्ञानिक प्रगति की बढ़ती मांगों को संबोधित करने का प्रयास किया है, और दूसरी ओर देश की स्वास्थ्य समस्याओं के व्यावहारिक समाधान खोजने की आवश्यकता को भी प्रोत्साहन दिया है।

प्रमुख बिंदु

- इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च द्वारा जारी डेटा इन्फ्लुएंजा A-H3N2 के मामलों की संख्या में वृद्धि को दर्शाता है,देश के अधिकांश हिस्सों में बुखार के साथ एक सप्ताह से अधिक समय तक चलने वाली तीव्र खांसी के बढ़ते मामलों को इन्फ्लुएंजा A-H3N2 से जोड़ा जा सकता है, जो वायरस का एक उपप्रकार है और फ्लू का कारण बनता है।
- ICMR ने पाया कि गंभीर तीव्र श्वसन संक्रमण (SARI) के साथ भर्ती सभी रोगियों में से लगभग आधे और क्लीनिकों में आने वाले रोगियों को इन्फ्लुएंजा A-H3N2 से पीड़ित पाया गया।

- श्वसन वायरस की निगरानी के लिए ICMR के पास 30 वायरल रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लेबोरेटरीज (VRDL) हैं। ये VRDL विभिन्न राज्यों के शीर्ष मेडिकल कॉलेजों से सम्बद्ध हैं और गंभीर तीव्र श्वसन संक्रमण (SARI) से पीड़ित रोगियों के नमूने एकत्र करती हैं।
- अस्पताल में भर्ती SARI के कम से कम 92% रोगियों में वायरस पाया गया, जो बुखार से पीड़ित दिखाई दे रहे थे और जिनमें 86% को खांसी है। इसके अतिरिक्त, 27% में सांस लेने में तकलीफ और 16% में घरघराहट के लक्षण दिखाई दिए। इसके अलावा, 16% में निमोनिया के लक्षण थे।

उपचार

- स्वास्थ्य निकाय के अनुसार, इन्फ्लुएंजा A-H3N2 से ग्रसित सभी SARI रोगियों में से लगभग 10% को ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है और 7% को ICU देखभाल की आवश्यकता होती है।
- यह एक वायरल फ्लू है, इसमें एंटीबायोटिक दवाओं का कोई फायदा नहीं है।
- रोगी में सांस फूलने और स्पस्मोडिक खांसी के गंभीर 10 से 12 दिनों तक लक्षण दिखाई दे सकते हैं।
- कोविड-19 और इन्फ्लुएंजा A-H3N2 से होने वाली बीमारी के लक्षणों में बहुत कम अंतर था। इसमें हाथ मिलाने या संपर्क अभिवादन के अन्य रूपों का उपयोग करने को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

स्रोत-TH

क्वाड समूह

चर्चा में क्यों ?

- मार्च में होने वाली क्वाड समूह की बैठक से पूर्व ऑस्ट्रेलिया और जापान के प्रधानमंत्री मार्च में भारत की यात्रा करेंगे।
- प्रधानमंत्रियों अल्बनीस और किशिदा की यात्रा इस वर्ष के दौरान होने वाली बातचीत की श्रृंखला की पहली यात्रा होगी।
- ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बनीज ने घोषणा की कि वह 8-11 मार्च को अहमदाबाद से भारत के अपने दौरे की शुरुआत करेंगे, जहाँ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी **बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी** के चौथे टेस्ट मैच में उनके साथ शामिल होंगे। जापानी मीडिया के अनुसार, PM फुमियो किशिदा 19 मार्च को दिल्ली पहुंचेंगे।

अन्य प्रमुख बिंदु

KARMANYEVADHIKARASTE THE STUDY MAA PHALESHU KADAACHAN An Institute for IAS

- विदेश मंत्रालय (MEA) ने सूचित किया कि ऑस्ट्रेलियाई नेता के साथ सीनेटर डॉन फैरेल (व्यापार और पर्यटन मंत्री) तथा मेडेलीन किंग (संसाधन मंत्री, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया) और अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं एक उच्च-स्तरीय व्यापार प्रतिनिधिमंडल होगा।
- "दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को जून, 2020 में एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी के रूप में उन्नत किया गया था, जिसे लगातार उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान एवं क्षेत्रों में सहयोग के माध्यम से मजबूत और गहरा किया गया है।"
- ऑस्ट्रेलिया-भारत आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते के लागू होने के बाद ऑस्ट्रेलिया की ओर से यात्रा की घोषणा "ऑस्ट्रेलियाई व्यवसायों के लिए नए अवसर प्रदान करेगी," उन्होंने व्यापार समझौते का स्वागत करते हुए कहा था कि वह प्रमुख भागीदार देशों के साथ व्यापार की भारत की COVID रणनीति का हिस्सा हैं।

क्वाड क्या है?

- क्वाड यानि 'चतुर्भुज सुरक्षा संवाद' (QUAD- Quadrilateral Security Dialogue) की स्थापना साल 2007 में हुई थी। क्वाड भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच अनौपचारिक रणनीतिक वार्ता मंच है।
- इसका प्रमुख उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शांति और समन्वय स्थापित करना है।

क्वाड विदेश मंत्रियों की भारत यात्रा का उद्देश्य

- व्यापक रणनीतिक साझेदारी देशों के बीच हमारे रक्षा, आर्थिक और तकनीकी हितों को बढ़ाने के लिए एक साथ काम करने की संयुक्त प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।
- इस यात्रा को बढ़ते द्विपक्षीय व्यापार, सुरक्षा और लोगों से लोगों के संपर्क में राजनीतिक इच्छाशक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा रहा है, दिसंबर में भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते के लागू होने पर इसे काफी बढ़ावा मिला है।

स्त्रोत –TH

समुद्री घोड़े

चर्चा में क्यों?

- हालिया खबरों के अनुसार बड़े पैमाने पर मछली पकड़ने के कारण कोरोमंडल तट से समुद्री घोड़े को ओडिशा की ओर पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।
- हिप्पोकैम्पस केलॉगी मछली, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में पाए जाने वाले घोड़े जैसे सिर वाली मछली की 12 प्रजातियों में से एक है।

हिप्पोकैम्पस केलॉगी मछली

- वंश हिप्पोकैम्पस में 70 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जो दुनिया भर में उथले उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण समुद्री जल में पायी जाती हैं। अश्वमीन (समुद्री घोड़ा), वंश हिप्पोकैम्पस की छोटी समुद्री मछलियों की 54 प्रजातियों को दिया गया नाम है।
- ओडिशा तट से दूर बंगाल की खाड़ी में मछली पकड़ने की तीव्रता कम है, लेकिन पूर्वी भारतीय राज्य का उथला तटीय पारिस्थितिकी तंत्र घोड़े जैसे सिर वाली मछली के लिए नया आराम क्षेत्र नहीं हो सकता है।
- दुनिया भर में समुद्री घोड़ों की 54 प्रजातियां बताई गई हैं। भारत के तटीय पारिस्थितिक तंत्र में इंडो-पैसिफिक में पायी जाने वाली 12 में से नौ प्रजातियां पायी गयी हैं , जो कि सीहॉर्स आबादी के हॉटस्पॉट में से एक है, जो कि समुद्री घास, मैंग्रोव, मैक्रोगल बेड और कोरल रीफ जैसे विविध पारिस्थितिक तंत्रों में पायी जाती हैं।
- इन 9 प्रजातियों को लक्षद्वीप और अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के अलावा गुजरात से ओडिशा तक आठ राज्यों और पांच केंद्रशासित प्रदेशों के तटों पर पाया जाता है।
- ग्रेट सीहॉर्स की आबादी, जो 'कमजोर' श्रेणी में शामिल की गई आठ प्रजातियों में से एक है, पारंपरिक चीनी दवाओं के लिए इसके अतिदोहन और सजावटी मछली के रूप में सामान्य विनाशकारी मछली पकड़ने और मत्स्य पालन के कारण घट रही है।
- "2001 से समुद्री घोड़े मछली को पकड़ने और व्यापारिक गतिविधियों पर प्रतिबंध के बावजूद, भारत में गुप्त रूप से मछली पकड़ना और व्यापार करना जारी रहा है।

लंबा प्रवास

- सीहॉर्स अच्छे तैराक नहीं होते हैं, लेकिन राफ्टिंग द्वारा माइग्रेट करते हैं और अपनी आबादी के सफल रखरखाव के लिए नए आवासों में प्रवास करते रहते हैं।
- हालांकि, पाक खाड़ी और मन्नार की खाड़ी से ओडिशा तक समुद्री घोड़े का 1,300 किमी. उत्तर की ओर पलायन भारत के दक्षिणी तट के आस-पास मछली पकड़ने की व्यापक गतिविधियों की प्रतिक्रिया है। इन्हें बेहतर संरक्षण की जरूरत है।
- "मन्नार की खाड़ी और पाक खाड़ी क्षेत्र की तुलना में मछली पकड़ने की तीव्रता बहुत कम है। इसलिए, भले ही वे उत्तर की ओर पलायन करते हैं, उनके पास उपयुक्त निवास स्थान नहीं होगा, जब तक कि उन्हें पकड़ने वाले मछली पकड़ने के जालों पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाता है या मछली पकड़ने की प्रथाओं जैसे ट्रॉलिंग को रोक नहीं दिया जाता है।

स्त्रोत –TH

कलक्कड़-मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में, तमिलनाडु के अशोक ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलॉजी एंड द एनवायरनमेंट (ATRII) के दो शोधकर्त्ताओं ने भारत में पहली बार कलक्कड़-मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व के बफर जोन में दुनिया के पहले माइम्यूसेमिया सीलोनिका दुर्लभ कीट की प्रजाति देखी है।

माइम्यूसेमिया सीलोनिका के बारे में

- इसे पहली बार अंग्रेजी एंटोमोलॉजिस्ट जॉर्ज हैम्पसन द्वारा सचित्र और वर्णित किया गया था और 127 साल पहले (1893 में) श्रीलंका में त्रिंकोमाली में देखा गया था।
- Mimeusemia ceylonica एक कीट प्रजाति है, जो उपप्रजाति Agaristinae और परिवार Noctuidae से संबंधित है।

कलक्कड़-मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व के बारे में

- तमिलनाडु के तिरुनेलवेली और कन्याकुमारी जिले में कलक्कड़ मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व (KMTR) विविध वनस्पतियों और जीवों वाले संरक्षित क्षेत्रों में से एक है।
- इसे "तमिलनाडु का पहला टाइगर रिजर्व" और देश का 17वां टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था।
- इसमें दक्षिण में कन्याकुमारी वन्यजीव अभयारण्य और उत्तर में नेल्लई वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं।
- इस बाघ अभ्यारण्य से थमिराबरानी नदी का उद्गम होता है।
- रिजर्व को "नदी अभयारण्य" के रूप में भी जाना जाता है, इस टाइगर रिजर्व से 14 नदियों का उद्गम होता है।
- **वनस्पति:** इस क्षेत्र में वनस्पति के कई प्रकार हैं जो धीरे-धीरे सूखे कंटीले जंगल से सूखे पर्णपाती, नम पर्णपाती और पश्चिमी तट के एक हिस्से में रिजर्व के ऊंचे इलाकों में गीले सदाबहार वनों में बदल जाते हैं।
- **जीव:** लायन टेल्ड मकॉक , नीलगिरी ताहर, नीलगिरि पिपिट, ग्रे हेडेड बुलबुल, ब्लू विंग्ड पैराकेट आदि।

स्त्रोत – TH

किंजल मिसाइल

चर्चा में क्यों?

- रूस ने हाल ही में यूक्रेन पर बड़े पैमाने पर हमलों के हिस्से के रूप में हाइपरसोनिक किंजल मिसाइलें दागीं।

किंजल मिसाइल के बारे में:

- Kh-47M2, जिसका उपनाम "Kinzhal" (डैगर) है, एक परमाणु-सक्षम, रूसी वायु-प्रक्षेपित बैलिस्टिक मिसाइल है।
- यह मार्च, 2018 में एक भाषण के दौरान रूसी राष्ट्रपति पुतिन द्वारा अनावरण किए गए छह "अगली पीढ़ी" हथियारों में से एक थी।
- किंजल मैक-10 (12,350 किमी/घंटा) तक की गति तक पहुंच सकती है।
- यह 480 किलो तक के पेलोड के साथ पारंपरिक और परमाणु दोनों तरह के वारहेड तथा 10-50 kt वारहेड के साथ थर्मोन्यूक्लियर सामग्री ले जा सकती है।
- इसकी रेंज 1,500-2,000 किमी बताई गई है।
- किंजल की लंबाई 8 मीटर, व्यास 1 मीटर और प्रक्षेपण का वजन लगभग 4,300 किलोग्राम है।
- इसे लगभग 18 किमी (59,000 फीट) की ऊंचाई पर मिग-31 लड़ाकू जेट से लॉन्च करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- यह मिसाइल शत्रुतापूर्ण वायु रक्षा प्रणालियों पर काबू पाने के लिए अपनी उड़ान के सभी चरणों के दौरान युद्धाभ्यास करती है।

हाइपरसोनिक मिसाइल क्या है?

- हाइपरसोनिक मिसाइल एक हथियार प्रणाली है जिसकी गति कम से कम मैक-5 है जो ध्वनि की गति से पांच गुनी है।
- ये मिसाइलें सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल रक्षा प्रणालियों को लक्षित करने के लिए बेहद तेज हैं।

स्रोत –TH

THE STUDY
KARMANYEVADHIKARASTE MA PHALESHU KADACHAN
An Institute for IAS